

गुरु रवदास की जयंती

चर्चा में क्यों?

हरियाणा के मुख्यमंत्री ने [गुरु रवदास](#) को उनकी जयंती पर शुभकामनाएँ और बधाई दी। गुरु रवदास जयंती माघ माह की पूर्णमा तथि को मनाई जाती है।

मुख्य बद्दि

- संतों के सम्मान हेतु सरकारी पहल
 - हरियाणा सरकार ने संत-महापुरुष सम्मान और वचिार प्रचार-प्रसार योजना शुरू की।
 - इस पहल के तहत राज्य स्तर पर संतों और महापुरुषों की जयंती और शताब्दी मनाई जाएगी।
- गुरु रवदास के बारे में:
 - संत गुरु रवदास, जनिका जन्म 1377 ई. में सीर गोवर्धनपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था, एक संत, [दार्शनिक, कवि और समाज सुधारक](#) के रूप में पूजनीय हैं।
 - [रैदास, रोहदास और रवदास जैसे वभिन्न नामों से भी जाने जाते हैं और वे पारंपरिक रूप से चमड़े के काम से जुड़े समुदाय से संबंधित थे।](#)
 - गुरु रवदास ने भक्त आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, [उन्होंने ईश्वर के प्रति समर्पण पर ज़ोर दिया और आध्यात्मिक समानता को बढ़ावा दिया।](#)
 - उनकी शिक्षाओं में मानव अधिकार, समानता और आध्यात्मिक ज्ञान पर ज़ोर दिया गया है।
 - उनकी कुछ रचनाएँ प्रतिष्ठित धर्मग्रंथ, [गुरु ग्रंथ साहिब जी](#) में शामिल हैं, जो उनके साहित्यिक और दार्शनिक महत्त्व को बढ़ाती हैं।

भक्त आंदोलन

- भक्त आंदोलन का विकास तमलिनाडु में 7वीं और 9वीं शताब्दी के बीच हुआ।
- यह [नयनारों \(शिव के भक्त\) और अलवारों \(वशिणु के भक्त\)](#) की भावनात्मक कविताओं में परलक्षित होता है।
 - इन संतों ने धर्म को एक टंडी औपचारिक पूजा के रूप में नहीं, बल्कि पूज्य और उपासक के बीच प्रेम पर आधारित एक प्रेमपूर्ण बंधन के रूप में देखा।
- समय के साथ दक्षिण के वचिार उत्तर की ओर बढ़े लेकिन यह बहुत धीमी प्रक्रिया थी।
- [भक्त वचिारधारा को फैलाने के लिये एक अधिक प्रभावी तरीका स्थानीय भाषाओं का उपयोग था।](#) भक्त संतों ने स्थानीय भाषाओं में अपने पद लिखे।
- उन्होंने [संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी किया ताकि उन्हें व्यापक दर्शकों के लिये समझने योग्य बनाया जा सके।](#)
 - उदाहरणों में शामिल हैं [ज्ञानदेव](#) ने मराठी में लिखा, [कबीर, सुरदास और तुलसीदास](#) ने हिंदी में, [शंकरदेव](#) ने असमिया को लोकप्रिय बनाया, [चैतन्य और चंडीदास](#) ने बंगाली में अपना संदेश फैलाया, [मीराबाई](#) ने हिंदी और राजस्थानी में लेखन शामिल है।